MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY
AJMER (RAJ.)

शोध प्रारुप

(Format for outline proposed Research Work)

1- Name of Scholar:

(InEnglish) **RAMAWATAR SHARAMA**

(InHindi) रामावतार शर्मा

2- Title of the Research Work:

(InEnglish) **PURITY IN SAPTARSHI SMIRITI GRANTHS: HOLISTIC STUDY**

(InHindi) सप्तर्षि –स्मृति ग्रन्थों में शुचिता : समग्र अध्ययन

3- Location: संस्कृत–विभाग

सेठ मुरलीधर मानसिंहका राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भीलवाड़ा (राज.)

Scanned with CamScanner

4. प्रस्तावित शोधकार्य की प्रस्तावना,महत्त्व एवं उद्देश्य

(Introduction importance of proposed investigation, Objectives)

(अ) • प्रस्तावना (Introduction)

बचपन में शौच क्रिया के बाद शुद्ध मिट्टी या साबुन से सात बार हाथ धोने के लिए माँ का आदेश नियमित रुप से मिलता था। प्राथमिक शिक्षा ग्रहण के समय विद्यालय की प्रार्थना सभा में गुरुजनों द्वारा शारीरिक स्वच्छता का नियमित निरीक्षण किया जाता था। गुरुजी द्वारा उदाहरण दिया जाता था, कि श्वान भी बैठने से पूर्व अपने स्थान की सफाई करता है, आप तो मनुष्य हैं. बचपन में प्राप्त स्वच्छता की शिक्षा के कारण स्वच्छता के प्रति मेरा मौलिक आकर्षण रहा है।

हमारे राष्ट्र के प्रधानमंत्री ने लाल किले से अपने सम्बोधन में देशवासियों से स्वच्छता के लिए अपील की थी, उसने आज राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का रुप ले लिया है। हमारे देश में स्वच्छता के लिए समय–समय पर महापुरुषों द्वारा आन्दोलन होते रहे हैं, जिनमें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का स्वच्छता हेतु जागरुकता के लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्राचीन जीवन पद्धति में स्वच्छता का विशेष स्थान रहा था, जिसमें हमारे दैनिक क्रियाकलापों का प्रारम्भ ही आभ्यन्तर एवं बाह्य दोनों प्रकार की स्वच्छता से होता था। इसका मूल आधार हमारा वैदिक वाङ्मय रहा है जिसका सूत्रबद्ध वर्णन प्रमुख रुप से धर्मसूत्रों एवं ग्रह्यसूत्रों में प्राप्त होता है तथा व्यवस्थित एवं विशद् विवेचन स्मृतिग्रन्थों में उपलब्ध है। स्मृतिग्रन्थों में

Scanned with CamScanner

स्वच्छता के लिए शुचि,शुद्धि, पवित्रता आदि शब्दों का उल्लेख प्राप्त होता है। यहाँ स्वच्छता का व्यापक अर्थ में प्रयोग हुआ है। स्वच्छता का तात्पर्य केवल भौतिक एवं स्थूल पदार्थो की स्वच्छता तक ही सीमित नहीं है, अपितु भौतिक शुद्धि के साथ–साथ,अन्तःकरण की शुद्धि,आचरण की शुद्धि मन और विचारों की शुद्धि तथा धन की शुद्धि भी समाविष्ट है।

यहाँ सर्वांगीण स्वच्छता मानव जीवन के मौलिक, नैतिक मूल्यों में प्रमुख स्थान रखती है, अत एव इसकी गिनती धर्म के दस प्रधान लक्षणों में की गई है।

अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति।

विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञाननेन शुद्धयति।। मनु.5/109।।

निर्लेपं काञ्चनं भाण्डमद्भिरेव विशुद्धयति।

अब्जमश्ममयं चैव राजतं चानुस्पकृतूम्।। मनु.5/112 ।।

सर्वेषामपि चैतेषां वेदस्मृति विधानतः।

गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः त्रीनेतान्बिभर्ति हि।। मनु.6/89 ।।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

धीर्विधा सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।। मनु./6/92 ।i

वह स्वच्छता जो कि स्मृतिग्रन्थों में जीवन का सर्वोच्च मूल्य था, वर्तमानकाल में संकुचित हो गया है। वर्तमान में प्रायः स्थान, व्यक्ति या वस्तु विशेष की स्वच्छता को मुख्यतः स्वच्छता का अर्थ समझा जाता है। स्वच्छता की व्यापक अवधारणा को स्पष्ट करने और इसे व्यवहारिक बनाने के उपाय एवं प्रयासार्थ इस प्रस्तावित शोध विषय को चयन किया गया है, जिसकी

Scanned with CamScanner

वर्तमान प्रासंगिकता को देखते हुए तथा शोधार्थी की जिज्ञासा को महत्व देते हुए शोध निर्देशिका द्वारा अनुमोदित कर शोधार्थी को इस विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

(आ) • प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व (**Importance of Proposed Investigation**)

वर्तमान काल में स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढाने के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी तन्त्र एवं स्वैच्छिक संगठनों द्वारा विभिन्न जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है, जो प्रस्तावित शोधकार्य के महत्त्व की पुष्टि करते हैं।

वर्तमान में सदाचार और नैतिक मूल्यों में निरन्तर गिरावट आ रही है, अतः प्रस्तावित शोधकार्य के माध्यम से स्वच्छता की व्यापक अवधारणा को स्पष्ट कर आगामी पीढ़ी को आभ्यन्तर और बाह्य शुचि की शिक्षा प्रदान कर उनमें उच्च आदर्श नैतिक जीवन मूल्य के रुप में स्थापना करना है, जो स्वच्छ, स्वस्थ, निर्मल राष्ट्र के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकेगा ।

हॉल ही में उज्जैन सिंहस्थ महाकुम्भ के तत्त्वावधान में जो 51 सूत्री "अमृत संदेश बिन्दु" मानवता के कल्याण के लिए विश्व को समर्पित किये गये हैं, उनमें 24–26 बिन्दुओं में आन्तरिक व बाह्य शुद्धता पर बल दिया गया है। इनमें इस बात का विशेष उल्लेख किया गया है कि "स्वच्छता को प्रशासित विधि (कानूनी दबाव) के स्थान पर सामाजिक मूल्य के रुप में स्थापित किया जाना चाहिए। यह शोधकार्य इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा।

Scanned with CamScanner

(४) • **प्रस्तावित शोध कार्य के उद्धेश्य (Objectyives)**

1 प्रमुख स्मृतिग्रन्थों में विद्यमान स्वच्छता विषयक जीवन मूल्य को अपने समग्ररुप मे पुनः स्थापित करना।

2 सर्वविद् स्वच्छता के सनातन सामान्य एवं विशेष उपायों का अन्वेषण करना।

3 स्मृतिग्रन्थों को कर्त्तव्यबोध शास्त्र के रुप में स्थापित करना।

5. • **स्मृतिग्रन्थों पर पूर्वकृत शोधकार्य (Review)**

स्मृति ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषयों पर पूर्व में अनुसंधान कार्य किया गया है, उसका संक्षिप्त पुनरावलोकन इस प्रकार है–

- पराशर, देवल, एवम्, स्मृतियों का तुलनात्मक अध्ययन, (हि.)– कश्यप, डी.–दिल्ली, (इन प्रोग्रेंस)
- परासारभट्स कॉण्ट्रीब्यूशन टू विशिष्टाद्वैत–पद्यनाभन, एस. मद्रास, 1983, पी.एच.डी.
- बृहस्पति–सूरी–विरचिताया : कृत्यकौमुद्याः सम्पादनम् समीक्षात्मकम् अध्ययनम् च.(एस).–मिश्र जय कृष्ण, दिल्ली (रा.संस्कृत सं.)(पुरीपरिसर), 1982 वि. वारिधि
- विश्वमित्र, श्री कृत स्मृतितत्वमणेः समीक्षात्मक सम्पादनम् (एस). –महापात्रा, वेणुधर दिल्ली (रा.संस्कृत सं.)(पुरी परिसर), 1992 वि.वारिधि
- मनु.सामाजिक परिवर्तन में, कौटिल्य और गाँधी दर्शन का योगदान (हि.)– अग्रवाल, पूनम जबलपुर (इन प्रोग्रेस)

Scanned with CamScanner

- मनुस्मृति एवम् कौटिल्य–अर्थशास्त्रके संदर्भ में सामाजिक राजनीति का विचारधारा का अध्ययन (हि.) मिश्र, मिहिर कुमार, दरभंगा 2000, पी.एच.डी.
- मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्यस्मृति का तुलनात्मक अध्ययन (हि.)–सांवल पुष्पा, कुमायुँ, 1990 पी.एच.डी.
- मनुस्मृति का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्याड्.कन (हि.)–गार्गी, श्रीनगर, 1998, पी.एच.डी.
- मनुस्मृति में दार्शनिक बिन्दु : एक अध्ययन, वैदिक दर्शन के विशेष परिप्रेक्ष्य में (हि़.)–आर्य सत्येन्द्र प्रकाश– कुरुक्षेत्र, (इन प्रोग्रेस)
- मनुस्मृति में राजधर्म, मेधातिथि की व्याख्या के संदर्भ में (हि.)–त्रिवेदी, लता, लखनऊ, (इन प्रोग्रेस)
- याज्ञवल्क्य–शिक्ष, वाजसनेयी–प्रतिशाख्य तथा, : एक तुलनात्मक अध्ययन (हि.) –कुमार, सुरेश, कुरुक्षेत्र, 1995 पी.एच.डी
- याज्ञवल्क्य–स्मृति का समीक्षात्मक अध्ययन (हि.)–शास्त्री, विजय पॉल, कानपुर, 1976
- याज्ञवल्क्य–स्मृति, क्रिटिकल स्टडी ऑफ दि दायभाग ऑफ, (हि.)–रणबीर, हरिद्वार, 1983 पी.एच.डी

6. • **शोध–अन्तराल (Research Gap)**

स्मृतिग्रन्थों में किये गये शोधकार्य से ज्ञात हुआ है कि प्रायः स्मृतिग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषयों में से सामाजिक दशा, न्याय व्यवस्था, राजधर्म, दार्शनिक विचारधारा आदि ही अनुसंधान के विषय रहे हैं।

Scanned with CamScanner

स्मृतिग्रन्थों में विद्यमान स्वच्छता के पहलू पर प्रायः शोधकर्ताओं की मनोवृति उदासीन परक रही है, अतः वर्तमान समय में स्वच्छता के महत्त्व के आधार पर प्रस्तावित शोधकार्य का चयन किया गया है, जो सर्वथा मौलिक है। शोधार्थी को इस विषय पर किया गया कोई शोधकार्य दृष्टिगोचर नहीं हुआ है।

यह शोधकार्य इस शोध अन्तराल को पूरा करने में एक प्रभावी प्रयास सिद्व हो सकेगा। ऐसा शोधार्थी का मानना है।

अध्ययन से प्राप्त शोध सामग्री को विश्लेषित कर निम्न क्रमानुसार अध्यायवार प्रस्तुत किया जाएगा –

प्रथम अध्याय :– स्मृतिग्रन्थ एवं उनका संक्षिप्त परिचय

प्रमुख स्मृतिग्रन्थ एंव चयनित स्मृतिग्रन्थों के प्रमुख प्रतिपाद्य तथा स्वच्छता की अवधारणा

द्वितीय अध्याय –स्वच्छता और धर्म

स्वच्छता (शुचि) शब्द की व्युत्पत्ति, धर्म की परिभाषा एवं लक्षण , स्वच्छता का धर्म लक्षणों में स्थान और स्वच्छता पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति का आधार

तृतीय अध्याय – स्वच्छता और नैतिक आचरण

दया, अस्तेय, अहिंसा, अपरिग्रह, शील, सत्य आदि के परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययन।

Scanned with CamScanner

चतुर्थ अध्याय – व्यक्तिगत स्वच्छता

शौच –क्रिया, विविध शारीरिकअवयवों, केश एवं वस्त्र आदि की स्वच्छता, भोजन की स्वच्छता का विवरण।

पंचम अध्याय – आवास परिसर की स्वच्छता

भवन की स्वच्छता, भूमि की स्वच्छता, पात्रों की स्वच्छता तथा उनके अपमार्जक और सूतक शुद्धि।

षष्ठ अध्याय– सार्वजनिक उपयोग के स्थानों की स्वच्छता

मार्ग की स्वच्छता, जल स्त्रोतों की स्वच्छता, जल की स्वच्छता तथा वायु की स्वच्छता।

सप्तम अध्याय – सर्वविद् स्वच्छता हेतु विधि,उपाय एवं इनकी आधुनिक प्रासंगिकता

अष्टम अध्याय – उपसंहार

7. **शोधविधि**

स्मृतिग्रन्थों की संख्या विद्धानों द्वारा 100 तक मानी गई है तथा भिन्न –भिन्न ग्रन्थों में स्मृतियों की संख्या भिन्न –भिन्न उपलब्ध होती है। इस शोधकार्य में डॉ. प्रभाकर शास्त्री द्वारा दो भागो में संपादित ''सप्तर्षि – स्मृति–समुच्यः'' में संकलित सात स्मृतिकारों की स्मृतियों में विद्यमान स्वच्छता की अवधारणा पर शोध कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन 2005, रचना प्रकाशन, 57 नाटाणी भवन मिश्रराजाजी का रास्ता चांदपोल बाजार,जयपुर 302001 से हुआ है। इस ग्रन्थ में उद्धृत 7 स्मृतिकारों के नाम इस प्रकार है – अत्रि,वसिष्ठ,काश्यप,गौत्तम,भरद्वाज,विश्वामित्र तथा पुलस्तय है।

अध्ययन में आवश्यकता के अनुरूप मनुस्मृति याज्ञवल्क्यस्मृति की स्वच्छताविषयक अवधारणाओं को भी उद्धृत किया जायेगा।

Scanned with CamScanner

शोध क्रम

1 विभिन्न स्त्रोतों से स्मृतिग्रन्थों का संकलन कर इनका विस्तृत एवं गहन अध्ययन किया जाएगा।

2 अध्ययन के आधार पर प्रस्तावित शोधविषय से सम्बन्धित शोधसामग्री को एकत्रित किया जाएगा।

3 एकत्रित सामग्री को अध्यायवार विश्लेषित कर शोध–प्रबन्ध के रुप में संयोजित किया जाएगा। विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण विवरणात्मक शैली में तुलनात्मक और समीक्षात्मक रुप में किया जाएगा।

8. • सन्दर्भ सूची –

- अत्रि स्मृति,
- आपस्तम्ब स्मृति,
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र,
- आश्वालायन ग्रहय सूत्र,
- गौत्तम धर्मसूत्र, दक्ष स्मृति,
- पारासर स्मृति, मनु स्मृति,
- मानव जीवन और स्मृति शास्त्र–शर्मा, श्री कृष्ण, जैन धर्मचन्द, राजस्थान ग्रन्थागार जोधपुर 2007
- शंख स्मृति, स्मृति चन्द्रिका

Scanned with CamScanner

- मनुस्मृति में राजधर्म, मेधातिथि की व्याख्या के संदर्भ में (हि.)–त्रिवेदी, लता, लखनऊ, (इन प्रोग्रेस)
- याज्ञवल्क्य–शिक्षा, वाजसनेयी–प्रतिशाख्य तथा, : एक तुलनात्मक अध्ययन (हि.) –कुमार, सुरेश, कुरुक्षेत्र, 1995 पी.एच.डी
- एन्सिएन्ट इण्डियन हेयर स्टाइल ऑफ विमेन संस्कृत लिटरेचर – कु. अदिति भट्टाचार्या, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

कोष ग्रन्थ

- अमर कोश– जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपुर 2005
- प्रेक्टिकल संस्कृत, इग्लिंश–डिक्शनरी, वाममन शिवराम आप्टे, गोपाल नारायण एण्ड कम्पनी बोम्बे
- संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, एम–विलियम, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 1960
- हिन्दी शब्दार्थ परिजात, सम्पादक–द्वारिका प्रसाद शर्मा, इलाहाबाद

पत्र–पत्रिकाएँ

- पारीक, सुरुचि–संस्कृत वाड.ग्मय में मानव जीवन का नीति तत्व– संस्कृत विभाग से मु.मा.रा.क.महावि. भीलवाड़ा द्वारा आयोजित 14–15 फरवरी को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 2007 के शोध संकलन में पृ0 184–185
- बत्रा, राजेश –भावोपपन्नाः शारीरिक विकाराः – भारती संस्कृत मास पत्रिका जयपुर (राज.) जुलाई 2013 पृ. 12–15
- यादव, उषाकिरण –मनुस्मृतौ पृथ्वीतत्वम् संरक्षणौपायाश्च, भारती संस्कृत मास पत्रिका जयपुर 2015 पृष्ट 21–22

Scanned with CamScanner

➢ वर्मा, आर. सी. – आचार्य शुक्र और जीवन मूल्य – संस्कृत वाङ.मय में जीवन मूल्य विषय पर 14–15 फरवरी 2007 को संस्कृत विभाग से. मु. मा. रा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भीलवाड़ा द्वारा आयोजित राष्ट्रिय संगोष्ठी के शोध संकलन पृ.116–118

➢ त्रिपाठी, सदानन्द – समाज और राष्ट्र निर्माण में नैतिक शिक्षाएँ –महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्याध्यन प्रतिष्ठान, जवासिया, उज्जैन (म.प्र.) जन. – जून 2012 पृ. 131–138

Outline Approved

Name of Supervisor

DR. USHA KIRAN YADAV

Govt. S.M.M. Kanya P.G. Collage Bhilwara

14/9/2016

Signature Of Supervisor (With Date &Seal)

डॉ. (श्रीमती) उषा किरण यादव
प्राध्यापिका (संस्कृत)
से० मु० मा० राजकीय कन्या महाविद्यालय
भी...

Name of Candidate

RAMAWATAR SHARMA

Signature Of Candidate (With Date)

14/9/016

Scanned with CamScanner